"यह कहानी विभिन्न मनःस्थितियों में जी रहे तीन ऐसे पात्रों की कहानी है जो असामान्य जीवन जीने को अभिशप्त हैं.....तीनों पात्र मोहित, सतिया और रज़िया असामान्य परंतु एक दूसरे से भिन्न जीवनस्थितियों में जीने वाले व्यक्ति हैं जो भवसागर में गोते लगाते हुए एक दूसरे के निकट आ गये हैं- मोहित 'आई ऐम नॉट ओ.के. : यू आर ओ.के.' की चाइल्ड की जीवनस्थिति में है, सतिया 'आई ऐम ओ.के. : यू आर नॉट ओ.के.' की पेरेंट की जीवनस्थिति में है और रज़िया 'आई ऐम नॉट ओ.के. : यू आर नॉट ओ.के.' की अवसादमय स्थिति में जी रही है।.....तीनों में किसी को मुकम्मल जहां न मिला; किसी को ज़मीं न मिली, तो किसी को आसमां न मिला।".....

"काल की गति अबाध है- वह निर्लिप्त, निरपेक्ष, निःस्पृह एवं निर्मम रहकर प्रवाहित होता रहता है। वर्षानुवर्ष गर्मियों की छुट्टियों के आगमन के साथ रज़िया के हृदय में बढ़ने वाली धड़कन, नयनों में उद्वेलित प्रीति की प्यास, और मोहित के न आने से लू के थपेड़ों से सूखे चेहरे पर बहने वाले अश्रुओं से उसे क्या मतलब? उसे तो बस अनवरत वर्तमान से भविष्य की ओर प्रवाहित होते रहना है। कहते हैं कि लम्बा समय बीत जाने से हृदय के घाव भर जाते हैं और समय पुराने सम्बंधों की चमक को फीका कर नये सम्बंध बना देता है; परंतु रज़िया के जीवन में ऐसा कुछ घटित नहीं हो रहा था। उसका जीवन मोहित पर ठहर सा गया था- उसका तो जो भी था वह मोहित ही था; न तो उसके मन में कोई नवीन सम्बंध बनाने की लालसा थी और न वह अपने को इस योग्य समझती थी। वह तो ऐसी मीरा थी जिसके लिये उनका पद “मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई” अक्षरशः चरितार्थ होता था।".....

"पलंग पर गिरते हुए मोहित का चेहरा सतिया के चेहरे के बिल्कुल निकट आ गया था और वह सतिया के नेत्रों में कामेच्छा का अथाह सागर उमड़ता हुआ देख रहा था। जब तक सतिया मोहित से बीते दिनों की बातें करती रही थी, तब तक मोहित सतिया की आत्मीयतापूर्ण बातों से उत्कंठित होता रहा था, तथापि सतिया द्वारा अकस्मात इतनी उद्दाम वासना के प्रदर्शन से वह हतप्रभ हो गया था। मोहित अपने स्वभाव के अनुसार अनजान उफ़नाते सागर में गोता लगाने से सदैव घबरा जाता था। उसके संस्कारगत सुरक्षातंत्र अकस्मात जागरूक हो गये और उसे पारिवारिक, सामाजिक एवँ नैतिक भयों ने आ कर घेर लिया था; और अपने को डूबने से बचाने का यत्न सा करता हुआ वह एक झटके से उठकर कमरे से बाहर आ गया था।

दूसरे दिन मोहित से काफ़ी जूनियर एक दलित आई. ए. एस. अधिकारी की नियुक्ति कैबिनेट सचिव के पद पर हो गई थी।

मोहित, सतिया ओर रज़िया तीनों ही “भीगे पंख” के पक्षी थे और तीनों ही अपनी-अपनी लड़ाई हार गये थे- मोहित एक सफल ब्यूरोक्रेट न बन सका, सतिया मोहित का समर्पण प्राप्त न कर सकी और रज़िया जीवन भर हारते हारते अपना जीवन ही हार गई।"